जय अम्बे गौरी मैया , जय श्यामा गौरी
निशदिन तुमको ध्यावत , हरी ब्रह्म शिवजी , जय अम्बे ....

मांग सिंदूर बिराजत , टिको मृगमद को ,
उज्जवल से दोउ नैना , चन्द्रवदन निको , जय अम्बे ....

कनक सामान कलेवर , रक्ताम्बर राजे ,
रक्तपुष्प गलमाला , कंठहार सजे , जय अम्बे ....

केहरी वाहन रजत , खड्ग खप्पर धारी
सुर नर मुनि जन सेवत , तिनके दुख हरी , जय अम्बे ....

कानन कुंडल शोभित , नासाग्रे मोती
कोटिक चन्द्र दिवाकर , समरजत ज्योति , जय अम्बे ....

शुम्भ - निशुम्भ विदारे , महिषासुर घाती
धूम्र -विलोचन नैना , निशदिन मदमाती जय अम्बे ....

चंद -मुंड संघारे , शोणित बीज हरे
मधु कैटभ दोउ मारे , सुर भयहीन करे जय अम्बे ....

ब्रह्माणि , रुद्रानी तुम कमला रानी ,
अगम -निगम बखानी . तुम शिव पटरानी , जय अम्बे ....

चौंसठ योगिनी गावत , नृत्य करत भैरों ,
बजत तब मृदंगा , और बजत डमरू , जय अम्बे ...

तुम हो जग की माता , तुम ही हो भरता ,
भकतन की दुःख हरता , सुख सम्पति करता , जय अम्बे ....

भुजा चार अती शोभित , वर मुद्रा धारी ,
मनवांछित फल पावत , सेवत नर नारी , जय अम्बे ....

कंचन थाल विराजत , अगर कपूर बाती
श्री मालकेतु में राजत , कोटि रातन ज्योति , जय अम्बे ....

श्री अम्बे जी की आरती , जो कोई नित गावे ,
कहत शिवानान्दा स्वामी , सुख सम्पति पावे जय अम्बे ....